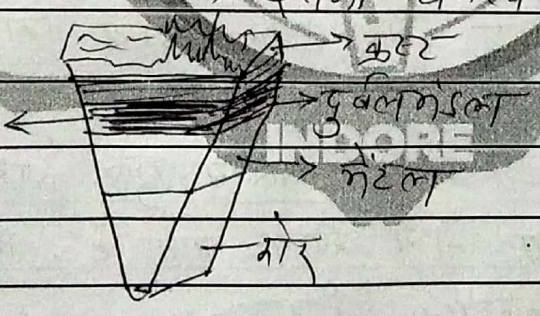




प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

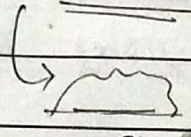
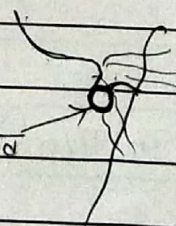
1	A	<p>फेड हॉयल की नव गरा परिकल्पना -</p> <p>→ तारों में नाभिकीय संलयन की उत्पत्ति के संदर्भ में है</p> <p>→ यह ब्रह्माण्ड के अस्तित्व के बिग-बैंग सिद्धांत का समर्थन करती है।</p> <p>→ इसके अलावा ब्रह्माण्ड स्थिर है।</p>
2	B	<p>दुर्बल मैटल -</p> <p>उपरी मैटल व निचले क्रस्ट के बीच का 100 - 200 किमी. की परत</p> <p>→ ज्वालामुखी क्रिया के दौरान उद्गार का स्त्रोत</p> <p>→ इसका घनत्व क्रस्ट से अधिक होता है।</p>  <p>The diagram shows a cross-section of the Earth's interior. The top layer is labeled 'Crust'. Below it is 'Weak Metal' (Weak Metal). Below that is 'Mantle'. The bottom layer is 'Core'. Arrows point to each layer.</p>
3	C	<p>कायांतरित चट्टानें -</p> <p>हाथ, दाब व शैक्षणिक क्रियाओं के परिवर्तनकारी प्रभाव के चलते आग्नेय व अवसादी चट्टानों से कायांतरित चट्टानें बतली हैं।</p>

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जैसे - ग्रेनाइट (आग्नेय) - नीस (वायुमंडलीय)
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	चूना पत्थर (दक्खी) - संगमरमर (वायुमंडलीय)
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	गैब्रो (आग्नेय) - सरपेंडिन
<input type="checkbox"/>	①	बैथोलिथ - ① आंतरिक आग्नेय चट्टान का प्रकार
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	 शाब्दिक
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	② छोटे गुम्बद गुम्बद के आकार की
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	③ यू.एस.ए. की इदाहो बैथोलिथ तथा कनाडा की कोस्ट रेंज, बैथोलिथ के उदाहरण हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	E	स्वारनद कुल डेल्टा →
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ ज्यादातर स्वारनद कुल डेल्टा का निर्माण करती हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ नदी का स्वारीय कुल जहाँ राजा तथा लक्ष्मीय जल मिल जाते हैं, स्वारनद कुल डेल्टा कहलाता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	 स्वारनद कुल समुद्र
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार-

1	f	→ हिमालय द्वारा निर्मित स्थलाकृति कुनालक कहलाती है।
		→ हिम डीप के नाम से भी प्रचलित
		→ हिमाच्छादित जगहों जैसे अंटार्कटिका, ग्रीनलैंड में पाये जाते हैं।
1	g	सूर्य कलंक
		सूर्य के कोरोना मंडल में दिखाई देने वाले अरबों काले रंग के धब्बे
		→ अल्पकालिक तापमान व चुंबकीय प्रलंबन संघनन के कारण उत्पन्न होते हैं।
		→ ये लगभग 11 वर्षों के चक्र में घटते व बढ़ते क्रम में दिखाई देते हैं।
1	H	शुद्धमेघ - आकाशगंगा का नाम है।
		- मिल्की वे आकाशगंगा की सबसे नजदीकी आकाशगंगा है।
		- यह पृथ्वी से 2.5 मिलियन प्रकाश वर्ष दूर स्थित है।
1	I	सिजिगी - पृथ्वी पर समुद्रीजल के ऊपर उठने के चरम प्रभाव को सिजिगी कहते हैं।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ यह सूर्य की चंडमा के सम्मिलित गुरुत्वाकर्षण प्रभाव से उत्पन्न स्थिति है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ दीर्घ-वार (सिजिगी) 2 तरह से -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	(I) (II)
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	वियुति पक्षा श्रुति पक्षा
1	J	<u>डोलडूम</u> - ① पृथ्वी पर भूमध्यरेखा के दोनों ओर 10° उत्तर तथा 10° दक्षिण क्षेत्र डोलडूम कहलाता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	② शॉल करिबेथ भी कहते हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	③ कारण - पृथ्वी का $23\frac{1}{2}^\circ$ अंश तथा सूर्य की परिक्रमा
1	K	<u>भाबर का मैदान</u> -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	① पर्वतपटीय क्षेत्रों में बड़े गोलाशमों तथा बजरी जैसे अवसादों से बिभित मैदान है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	② नदियाँ विलुप्त होकर आगे

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	तराई में हवतरित होती हैं। ③ ये अनुपजाऊ होते हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
1	L	भारत में जूट उद्योग केंद्र -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	① पं. बंगाल में - रिशरा, गीरागढ़, बाली
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	② उत्तर प्रदेश - मिर्जाबापरनम, गुंडूर
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	③ उत्तर प्रदेश - कामपुर, सहजनवाँ
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	④ बिहार - पूर्णिया, कटिहार
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ भारत का जूट उत्पादन में प्रथम स्थान है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
1	M	<u>स्वर्णरेख नदी</u> → गुडाम → कोरा नागपुर पठार, झारखण्ड
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<u>सोना क्षेत्र</u> - झारखण्ड, परिचय बंगाल होते हुए उत्पिता रूट पर... बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ नदी के बजरी में सोना धातु मिलने के कारण स्वर्णरेख नाम पड़ा।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	1	N	<u>आम्र वर्षा</u> :- मानचित्र से उपरोक्त क्षेत्र के बीच तीव्र आर्द्र हवाओं से साथ वर्षा गारज के साथ होती है। → कई नाम है - काल बेशरणी, चैरी व लॉसम, नोर्वेस्टर → दक्षिण तथा दक्षिण पूर्व एशिया में यह आम्र की खेती के लिये लाभदायक होने के कारण इसे आम्र वर्षा कहते हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>			
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>			
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>			
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>			
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	1	0	भारत में स्वर्ण क्षेत्र - ① कोलार व हरिद्वार क्षेत्र, - कर्नाटक ② रामगिरि शान, अंबलपुर - उत्तरप्रदेश ③ बारागल (तेलंगाणा) ④ नीलगिरि एवं सलेम - तमिलनाडु → देश की कुल स्वर्ण उत्पादन का 98% केरल राज्य से होता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>			
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>			
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>			
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>			
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>			



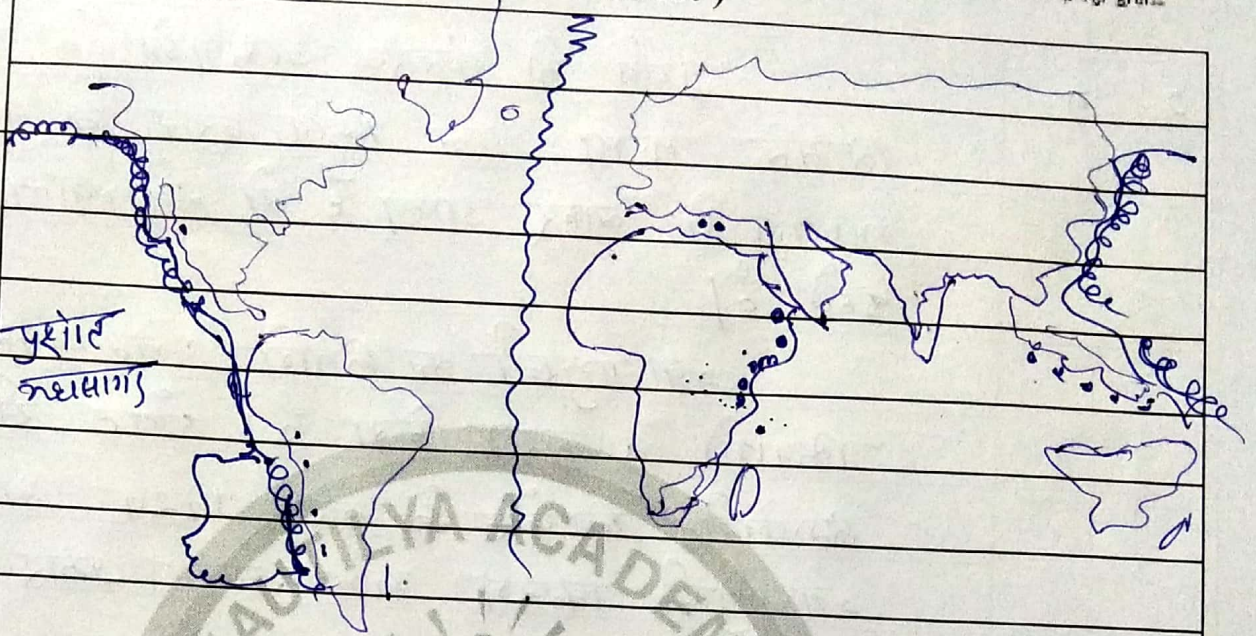
2	A	पृथ्वी की आंतरिक प्रक्रियाओं के फलस्वरूप विभिन्न मैग्मा जब किसी दरार या नली के माध्यम से बाहर आता है तो इसे ज्वालामुखी कहते हैं।																																								
		ज्वालामुखी का निर्माण एलेट विवर्तनीय प्रक्रियाओं के कारण होता है। एलेट सीमांत व अंतःप्लेटीय विस्फोट के कारण विश्व भर में ज्वालामुखी विवरण कालग-कालग प्रकार से हुआ है।																																								
		विश्व विवरण के आधार पर ज्वालामुखी																																								
		<table border="0" style="width: 100%; text-align: center;"> <tr> <td colspan="2">एलेट सीमांत</td> <td colspan="2">अंतःप्लेटीय</td> </tr> <tr> <td colspan="2">↓</td> <td colspan="2">↓</td> </tr> <tr> <td colspan="2">(जब एलेटीक धबकी किनारे से हो)</td> <td colspan="2">(एलेट के आंतरिक हिस्से से उद्गार)</td> </tr> <tr> <td colspan="2"> <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td>ज्वालामुखी</td> <td>द्विपीय</td> <td>ज्वालामुखी</td> <td>ज्वालामुखी</td> </tr> <tr> <td>क्षेत्रबला</td> <td>चाप</td> <td>रेखण</td> <td>शुद्ध</td> </tr> </table> </td> <td colspan="2"> <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td>↓</td> <td>↓</td> <td>↓</td> <td>↓</td> </tr> <tr> <td>प्रशांत</td> <td>जापान के</td> <td>हवाई द्वीप</td> <td>रियूनियूनियम</td> </tr> <tr> <td>अग्निवलय</td> <td>द्वीपों के</td> <td>के</td> <td>द्वीप के</td> </tr> <tr> <td></td> <td>ज्वालामुखी</td> <td>ज्वालामुखी</td> <td>ज्वालामुखी</td> </tr> </table> </td> </tr> </table>	एलेट सीमांत		अंतःप्लेटीय		↓		↓		(जब एलेटीक धबकी किनारे से हो)		(एलेट के आंतरिक हिस्से से उद्गार)		<table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td>ज्वालामुखी</td> <td>द्विपीय</td> <td>ज्वालामुखी</td> <td>ज्वालामुखी</td> </tr> <tr> <td>क्षेत्रबला</td> <td>चाप</td> <td>रेखण</td> <td>शुद्ध</td> </tr> </table>		ज्वालामुखी	द्विपीय	ज्वालामुखी	ज्वालामुखी	क्षेत्रबला	चाप	रेखण	शुद्ध	<table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td>↓</td> <td>↓</td> <td>↓</td> <td>↓</td> </tr> <tr> <td>प्रशांत</td> <td>जापान के</td> <td>हवाई द्वीप</td> <td>रियूनियूनियम</td> </tr> <tr> <td>अग्निवलय</td> <td>द्वीपों के</td> <td>के</td> <td>द्वीप के</td> </tr> <tr> <td></td> <td>ज्वालामुखी</td> <td>ज्वालामुखी</td> <td>ज्वालामुखी</td> </tr> </table>		↓	↓	↓	↓	प्रशांत	जापान के	हवाई द्वीप	रियूनियूनियम	अग्निवलय	द्वीपों के	के	द्वीप के		ज्वालामुखी	ज्वालामुखी	ज्वालामुखी
एलेट सीमांत		अंतःप्लेटीय																																								
↓		↓																																								
(जब एलेटीक धबकी किनारे से हो)		(एलेट के आंतरिक हिस्से से उद्गार)																																								
<table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td>ज्वालामुखी</td> <td>द्विपीय</td> <td>ज्वालामुखी</td> <td>ज्वालामुखी</td> </tr> <tr> <td>क्षेत्रबला</td> <td>चाप</td> <td>रेखण</td> <td>शुद्ध</td> </tr> </table>		ज्वालामुखी	द्विपीय	ज्वालामुखी	ज्वालामुखी	क्षेत्रबला	चाप	रेखण	शुद्ध	<table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td>↓</td> <td>↓</td> <td>↓</td> <td>↓</td> </tr> <tr> <td>प्रशांत</td> <td>जापान के</td> <td>हवाई द्वीप</td> <td>रियूनियूनियम</td> </tr> <tr> <td>अग्निवलय</td> <td>द्वीपों के</td> <td>के</td> <td>द्वीप के</td> </tr> <tr> <td></td> <td>ज्वालामुखी</td> <td>ज्वालामुखी</td> <td>ज्वालामुखी</td> </tr> </table>		↓	↓	↓	↓	प्रशांत	जापान के	हवाई द्वीप	रियूनियूनियम	अग्निवलय	द्वीपों के	के	द्वीप के		ज्वालामुखी	ज्वालामुखी	ज्वालामुखी															
ज्वालामुखी	द्विपीय	ज्वालामुखी	ज्वालामुखी																																							
क्षेत्रबला	चाप	रेखण	शुद्ध																																							
↓	↓	↓	↓																																							
प्रशांत	जापान के	हवाई द्वीप	रियूनियूनियम																																							
अग्निवलय	द्वीपों के	के	द्वीप के																																							
	ज्वालामुखी	ज्वालामुखी	ज्वालामुखी																																							

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का जं. 1 संस्वान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार



रिंग ऑफ फायर

प्रशांत महासागर के किनारों को सक्रिय
ज्वालामुखी होने के कारण रिंग ऑफ फायर भी
कहा जाता है।

अधिकतर ज्वालामुखी महाद्वीपीय-महासागरीय
किनारों पर अवस्थित हैं।

इंडोनेशिया तथा रिपुनियन, हवाई द्वीप का निर्माण
ज्वालामुखीय क्रिया के परिणामस्वरूप हुआ है।



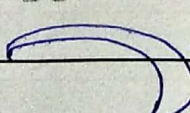
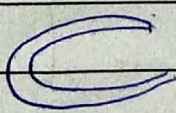
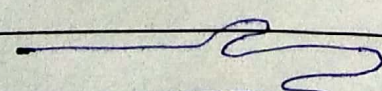
2	B	<p>पवन एक भूआकृतिक कारक है जो अपरदन एवं निक्षेपण क्रिया के परिणामस्वरूप विभिन्न स्थलरूपों का निर्माण करती है।</p>
		<p>इच्छा महस्थलों में पवनों का प्रभाव सर्वाधिक होता है। पवन अपवाहन तथा घर्षण आदि के द्वारा अपरदन करती है फिर परिवहन प्रक्रिया के दौरान शैथिल्य निक्षेपण आकृतियाँ बनाती हैं।</p>
		<p>पवनों द्वारा निर्मित स्थलाकृतियाँ</p>
		<p>अपरदनात्मक निक्षेपित</p>
		<p>→ फेरीमेंट → बालू रिव्वे</p>
		<p>→ फेरीलेन्स → अपरदन</p>
		<p>→ क्लाय → बालू रिव्वे की</p>
		<p>→ अपवाहन गर्त विभिन्न प्रकृतियाँ</p>
		<p>→ शुष्क → दरवान</p>
		<p>→ इत्रक → भूगर्भ रिव्वे</p>
		<p>→ टेबल</p>
		<p>→ घाटिका शैल</p>

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	पेसीमेंट → पर्वतों के पाद पर मेढ़ डाल वाले चट्टानी हल
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	पेसीलेन्स → पेसीमेंट निर्माण के चलते भारत: विभिन्न उच्च धरातल, आकृति विधीन मैदान
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	हलाया → महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में उथली जल झीलें / जिनमें लवणों के सन्तुष्ट विशेष पाये जाते हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अपवाहन गति → पर्वतों के एक ही दिशा में स्थायी प्रवाह से निर्मित उथले गर्त।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	क्षत्रक → महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों के चट्टानों जिनके तल नीचे से पर्वत तथा ऊपरी हिस्सा हार्पी के आकार का होता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	बालू रिल्वे →  वररववा
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	 → परवलविक रिल्वे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	 अनुदैर्घ्य रिल्वे

} अनुप्रस्थ
रिल्वे
→

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

2	C	महासागरीय जल के क्षेत्रीय स्थानांतरण / प्रवाह को 'जलधारा' कहते हैं।
		पृथ्वी का घूर्णन, कोरिओलिस बल तथा उच्चलिप्त पवन के कारण प्रवाहित
		जलधारायें झुंझ-झुंझ गतिशील तथा स्पष्ट दिशा वाली होती हैं।
		<u>जलधाराओं के प्रकार</u> —
		① <u>दिशा-निर्धारण में सहायक</u> —
		ये जलधारा की दिशा को निर्धारित कर समथ तथा ऊर्जा को बचत करती हैं।
		② <u>जलवायु में संशोधन</u> —
		जलधाराओं की प्रकृति (गर्म / ठंडी) के आधार पर क्षेत्रीय तापमान को प्रभावित करती हैं।
		जैसे - उत्तरी अटलांटिक ड्रिफ्ट के कारण उत्तरी यूरोप तथा पश्चिमी तट पर जाके जैसे ध्रुवीय देशों के जनजीवन में अनुकूलता मिली है।
		इसी प्रकार उष्ण कटिबंधीय तटों के समीप ठंडी जलधारा से ताप में कमी मिली है।

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	① आर्थिक प्रभाव -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	हंसी तथा गर्म जलधारा
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	के मिलने से वह क्षेत्र मत्स्य उत्पादन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	क्यों कि हंसी जलधाराये लेकटा
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	(मछलियों का स्वार्थ) लेकर डाली है वही
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	गर्म जलधारा मछली प्रजनन को अनुकूल करती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	ज्यो- कनाडा के पूर्वी तट पर कैब्रिजोर (हंसी)
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	तथा गल्फ स्ट्रीम (गर्म) के मिलने से महत्वपूर्ण मत्स्य क्षेत्र का निर्माण होता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अतः जलधाराये मानवता को
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	सकारात्मक रूप से कई मायनों में प्रभावित करती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

2	1	वे पवनें जो ग्लोब पर उच्च तथा निम्न वायुदाब पेटियों के मध्य स्थायी रूप से बहकर चलती रहती हैं; उच्चलिप्त पवनें कहलाती हैं।
		उच्चलिप्त पवनें स्थायी ऊर्ध्व निश्चित दिशा वाली होती हैं।
		पृथ्वी पर विभिन्न दाब करिबन्धों के अनुसार उच्चलिप्त पवनें तीन प्रकार की होती हैं।
		<ol style="list-style-type: none"> ① व्यापारिक पवनें ② पट्टा पवनें ③ ध्रुवीय पवनें
		<p><u>व्यापारिक पवनें</u> -</p> <p>ये 30° अक्षांशों से मध्यरेखा की ओर बहती हैं जो गोलार्धों में चलती हैं।</p> <p>दिशा → उत्तरी गोलार्ध में वे दक्षिण से दायीं बहती हैं।</p> <p>दक्षिणी गोलार्ध में उत्तर से बायीं बहती हैं।</p> <p>मध्यरेखा में ये एकत्र होकर धनधोर बहती हैं।</p>

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<u>पड़ुसा पवने</u> -	
		के उपोष्ण इत्य बाह्य करिबंध से	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	उपध्रुवीय निम्न दाब करिबंध की ओर चलने वाली पवने है।	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ उत्तरी गोलार्ध की उपोष्ण दक्षिणी गोलार्ध में इसकी गति तेज होती है।	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ दक्षिणी गोलार्ध में इसे गरमला चलीया, उचंडपचासा तथा चिरबला साश के नाम से जाने जाती है।	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<u>ध्रुवीय पवने</u> -	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	ध्रुवीय इत्य वायुदाब से उपध्रुवीय निम्न दाब की ओर उवाहित पवने ध्रुवीय पवने कहलाती है।	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ तापमान कम होने के कारण इनके वर्षा की संभावना कम होती है।	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	ये सभी पवने पृथ्वी के इनके स्थानों पर मौसम विधिक के लिए पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।	

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

2 E

बादल निर्माण प्रक्रिया के बाद जब जल कणों की मात्रा अधिक होती है और यह जल बूंदों के रूप में धरातल पर गिरता है, उसे वर्षा/वर्षण कहते हैं।

...

वर्षा; वायु में जलवाष्प की मात्रा, समुद्र से पूरी क्षारीय शक्ति, तापमान, वनस्पति आवरण जैसे कारकों के आधार पर तीन प्रकार की होती है।

वर्षा के प्रकार

संवहनीय वर्षा

चक्रवातीय वर्षा

पर्वतीय वर्षा

संवहनीय वर्षा -

जब गर्म वायु हल्की होकर ऊपर उठती है तो आशेषण के दौरान ^{जहाँ} तापमान में कमी लब्ध आइल में घटि होती है। जब जलवाष्प का संघनन होकर कपाली गेंध बनते हैं तो चमक व गरज के साथ धनधोर वारिश संवहनीय वर्षा कहलाती है।

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<u>वर्षण क्षेत्र - डोलूम् तथा विषुवरेखीय क्षेत्र।</u>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	② <u>पर्वतीय वर्षा -</u>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	पर्वतीय हाल के सहारे जब हवा का ऊपर की
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आरोहण होता है तो ठंडी होते हुए जलवाष्प
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	संघनित होकर शारीरिक वायु वर्षा करती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इसे पर्वतीय तथा मानसूनी वर्षा कहते हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इसका भारत के परिपक्वी घाट पर वर्षा
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	है (महाबलेश्वर)।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ पर्वतीय वर्षा में पर्वत के दूसरी तरफ का
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	क्षेत्र शुष्क तथा वर्षाविहीन ही रहता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ विश्व में सर्वाधिक वर्षा रूनी तरह की है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	③ <u>चक्रवातीय वर्षा -</u> गर्म तथा ठंडी वायु के मिलने
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	के ठंडी वायु गर्म हवा को ऊपर की ओर धकेलती है
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	निम्न ऊपर उठती वायु ठंडी होकर वर्षा करती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इसे चक्रवातीय वर्षा कहते हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ यह वर्षा धीरे तथा लंबे समय तक होती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	● <u>वर्षण क्षेत्र - मध्य क्षारीय.</u>

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

2	f	<u>शुभ्रद्वयसागरीय जलवायु -</u>
		शुभ्रद्वयसागर के
		भासपास की बिन्दुत जलवायु शुभ्रद्वयसागरीय जलवायु कहलाती है।
		इसका विस्तार - शुभ्रद्वयरेखा के दानो
		क्षोर 30° से 45° अक्षांशों के मध्य
		महाद्वीपों के परिधी भाग में पायी जाती है।
		कैलिफोर्निया की छाया
		यूरोप के मध्य सागरीय उपदेश
		मध्य चिली
		केप प्रांत
		दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया का लीय क्षेत्र
		<u>मुख्य विशेषताएँ -</u>
		① शीतकालीन वर्षा, जो चक्रवालों के द्वारा होती है।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
 (Mains Answer Sheet)

प्रश्न
 संख्या

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	② शीतकाल में मौसम गर्म और शुष्क होता है जबकि शीतकाल में साधारण होता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	③ इस जलवायु के अंतर्गत जाने वाले क्षेत्र रसोई फलों के खेती के अनुकूल हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	④ <u>क्षेत्रीय विस्तार</u> -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ भूमध्यसागर का उत्तरी किनारा
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ यूएसए में कैलिफोर्निया घाटी
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ द. अमेरिका का मध्य पिली
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ दक्षिण अमेरिका आफ्रीका का केप टाउन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ ऑस्ट्रेलिया का दक्षिण-पश्चिमी तट
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	⑤ वायुदाब हल्का उच्च रहता है। जिससे शीतकाल में वर्षा नहीं होती।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	⑥ पड़ुआ चक्रों के कारण होने वाली शीतकालीन वर्षा, पश्चिम से पूर्व की ओर जाने पर क्रमशः घटती है।

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

2	6	भारतीय मैदान भारत के विभिन्न स्थाकृतियों के कुल क्षेत्रफल का 43% हैं। पश्चिम में
		सतलुज से लेकर पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी तक का क्षेत्र उत्तर भारत का मैदान कहा जाता है।
		इसके अंतर्गत पंजाब-हरियाणा मैदान, राजस्थान मैदान, गंगा मैदान, असम घाटी आदि शामिल हैं। यह क्षेत्र कृषि को उचित से मापदंड उपजाऊ है।
		भारतीय मैदानों की भिन्नता को हम उत्तर भारत के मैदान तथा लघु मैदानों के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। इसी के मरुभूमि इनका अर्थ है।
		महत्व →
		① भारतीय मैदान अपनी मृदा की उर्वरता के लिये प्रसिद्ध हैं जो कृषि उपज देकर जीवन का धरण पोषण करती हैं।
		② मैदानों में बहने वाली नदियाँ मृमिगह जलशुद्धि को निरंतर बनाये रखती हैं।
		③ मैदान अवसंरचना, परिवहन विकास के आधार बनाते हैं।
		④ ये मैदान महत्वपूर्ण खनिज ससाधनों के

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भंडार हैं। पश्चिमी तट से मैनोजाइट प्राप्त होता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	(6) पूर्वी तटीय मैदान शैला प्रदत्त के लिए प्रसिद्ध है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	(5) फसलों की विविधता इन्हीं मैदानों की है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अर्थात् - उत्तर भारत का मैदान देश की 40% जनसंख्या का पोषण कर रहा है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- कोम्बू मैदान त्रारिफल, आम, ताल, सागवान के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- केरल तथा मालाबार तटीय मैदान गरम मसाला, केला सुपारी उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	समुद्रों तथा नदियों द्वारा निर्मित; जिलों इन्हीं मैदानों के सौंदर्य को बढ़ाती हैं। अर्थात् - चिल्का झील,
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	(7) विभिन्न संस्कृतियाँ प्राचीन काल से लेकर अब तक इन मैदानों में बनी-बिखरी। ये मैदान अश्लील के इतिहास की प्रसिद्ध लड़ाइयों के साक्ष्य हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भारतीय मैदान अपनी विशेष परिस्थिति के कारण अलग-अलग विशेषताओं से भरे हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
 (Mains Answer Sheet)

2	4	सिंधु नदी का हिमालयी सपवाह क्षेत्र का ही एक भाग है। सिंधु नदी का उद्गम तिब्बत में बोरगर
		पू के निकट चेमथोंगडुंखा नामक इलेरियाह से हुआ है। सिंधु की कुल लंबाई 2880 मी है जिनमें
		1114 मी. भारत में है।
		सिंधु नदी की विभिन्न सहायक नदियों में से दोषी सहायक नदियाँ - श्योक, गिलगित, काबुल
		कुरमि, शिगार, जास्कर, हुंता, कुवा, झाल आदि हैं।
		इनमें से कुछ हिमालय से तथा अन्य झुलेमान गाँवी से आकर सिंधु में मिलती हैं।
		सिंधु की बाँधी सहायक नदियाँ चिनाब, सैलम, रावी, घाघर, सतलज या पंचनद
		सिंधु में मीथनकोट, पामिस्थान में मिल जाती हैं।
		सिंधु नदी, अपनी सभी सहायक नदियों का जल लेकर अंततः कराची पूर्व में अरब सागर में गिरती है।



प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	सिंधु नदी भारत की महत्वपूर्ण नदी है जिसे लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच 1960 में सिंधु जल समझौता हुआ जिसके तहत भारत को इसकी तीन सहायक नदियों का जलाधिकार मिला।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	सिंधु नदी की महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	① <u>झेलम</u> - उद्गम - हिमालय की पीरपंजाल गिरिपद पर स्थित वेरीनाग झरने से → लीनागर में महारबड़ निर्माता करती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	② <u>चिनाब</u> - सिंधु की सबसे बड़ी सहायक नदी - चंडा व भागा नामक सरिताओं के मिलने से बनती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	③ <u>रावी</u> - उद्गम - हिमाचल प्रदेश में स्थित रोहतांग दर्रे के पश्चिम से
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	④ <u>व्यास</u> - रोहतांग दर्रे के निकट वि व्यास कुंड से उद्गम - कुल्लू घाटी के सौरभ्य को योग्य करती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	⑤ <u>सतलुज</u> - मानसरोवर के निकट राक्षसताल से उद्गम - भारद्वाज नामक परिपोषणा इसी नदी पर स्थित है।

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

2	ज	जलमार्ग, प्राचीन काल से ही आयाजाही के लिये उपयुक्त होते रहे हैं। वर्तमान में भारत में राष्ट्रीय जलमार्गों की संख्या 111 है जिन्हें राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम, 2016 के तहत घोषित किया गया।
		भारत के महत्वपूर्ण राष्ट्रीय जलमार्ग —
		① राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-1 :- — यह भागीरथी-गुगली-गंगा नदी तंत्र पर स्थित है। — इलाहाबाद से हल्दिया को जोड़ता है। — लंबाई - 1620 किमी.
		② राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-2 :- — ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित है। — धुबरी से सदिया के बीच। — लंबाई - 892 किमी.
		③ राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-3 :- — कोशी नदी पर — कोरापुरम से मोल्म के बीच। — लंबाई - 205 किमी। — उदोग मंडल और चंपकारा नहर व पश्चिमी समुद्र तट नहर के बीच स्थित

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का ज. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	4 राष्ट्रीय जलमार्ग - 4 - !
		- गोदावरी तथा कृष्णा
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	नदी से बनी काकीनदा - पुदुचेरी नहर को
		जलमार्ग - 4 का दर्जा प्राप्त है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- 2008 में घोषित
		- लंबाई - 1078 किमी.
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	5 राष्ट्रीय जलमार्ग - 5 - !
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	उड़ीसा व पश्चिम बंगाल
		में स्थित है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	6 राष्ट्रीय जलमार्ग क्र. 6 -
		असम में अवस्थित है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भारत के सभी राष्ट्रीय जलमार्गों के विकास
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	के लिए एक राष्ट्रीय जलमार्ग विकास परियोजना
		भी शुरू की है जो विश्व बैंक द्वारा समर्थित है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	रबिज तेल से ; पेट्रोलिफन शोधन से प्राप्त किया जाने वाला पदार्थ है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भारत में जहाँ भी टर्शियरी युग की अवसादी चट्टानें पायी जाती हैं वहाँ से रबिज तेल की प्राप्ति की जा सकती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	वर्तमान में भारत में रबिज तेल के उत्पादन हेतु 4 क्षेत्र अस्तित्व में हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	③ पश्चिमी उपतटीय पश्चिमी क्षेत्र
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	④ पूर्व उपतटीय क्षेत्र
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भारत के सभी 4 क्षेत्रों में सबसे पुराना रबिज उत्पादक क्षेत्र असम में स्थित डिगबोई है। यहाँ भारत की पहली तेल शोधनशाला



प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	की स्थापना 1893 में स्थापित की गई थी।
		भारत में सर्वोच्च तेल उत्पादन उपरतीय
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	क्षेत्र, राजस्थान व गुजरात से किया जाता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	हाल ही में राजस्थान में नये तेल क्षेत्रों
		की खोज की गई है जिनमें मंगला, भावधम,
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	एश्वर्य नामक तेल क्षेत्र शामिल है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	

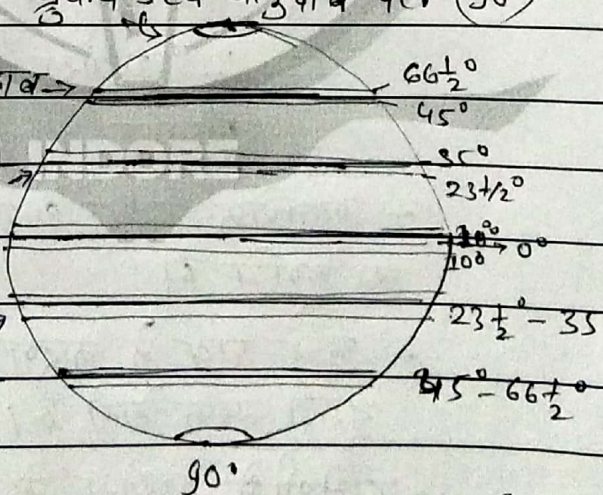
प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

3	3	वायुमंडल में उपस्थित वायु द्वारा पृथ्वी की सतह पर डाला गया दाब वायुमंडलीय दाब कहलाता है।
		यह उत्प्रेक स्थान पर अलग-अलग होता है, क्योंकि वायुदाब पर तापमान, ऊँचाई, पृथ्वी की ध्रुवनि गति, जलवाष्प आदि का प्रभाव पड़ता है।
		सामान्यतः वायुदाब पृथ्वी के मक्षीशो में निम्न से उच्च की ओर बढ़ता है परंतु ध्रुवनि गति के कारण इसमें परिवर्तन होता है। अतः पृथ्वी पर अस क्षैतिज विबरण के अनुसार वायुदाब की उत्पत्ति प्रक्रिया में 7 पेटियाँ हैं।
		(1) ध्रुवीय उच्च वायुदाब पेटि (90°)
		(2) उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पेटि
		(3) उपोष्ण उच्च दाब पेटि
		(4) विषुवतीय निम्न दाब पेटि
		(5) उपोष्ण उच्च दाब पेटि
		(6) उपध्रुवीय निम्न दाब पेटि
		(7) ध्रुवीय उच्च वायुदाब पेटि





<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	① विषुवत रेखीय निम्न वायुदाब पटी -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- • विस्तार - 10° उत्तरी अक्षांश से 10° दक्षिणी अक्षांश
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- • जोलूम क्षेत्र कहते हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- अत्यंत निम्न दाब होता है जिससे दोनों जोलाडों से जाने वाली व्यापारिक पवनें प्रतिदिन वर्षा करती हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- अत्यधिक ताप के कारण यहाँ शीत पवनें नहीं चलती
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	② उपोष्ण उच्च वायुदाब करिबंद -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	विस्तार - कर्क व मकर रेखाओं से लेकर 35° अक्षांश तक दोनों जोलाडों में विस्तृत
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- अत्यधिक दाब होता है जिसका कारण पृथ्वी का घूर्णन है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- उच्च दाब के कारण पवनें की गति स्थिर दूसरी तरफ होती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- दक्षिणी अक्षांश में इस करिबंद को अश्व अक्षांश भी कहते हैं क्योंकि पहले अधिक दाब के कारण नौकायान आगे बढ़ने के लिए धार धार छोड़ों को समुद्र में भार कम करने के लिए फेंक दिया जाता था।

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	③ उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पट्टी :-
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	विस्तार - 45° अक्षांश से $66\frac{1}{2}^\circ$ अक्षांश तक दोनों गोलार्धों में
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	निमग्न - उत्तर व दक्षिण से मान
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	उपोष्ण उच्च दाब तथा ध्रुवीय उच्च से आने वाली पवनें क्षापक में त्वरकर ऊपर उठ जाती हैं जिससे निम्न दाब का निर्माण होता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	④ ध्रुवीय उच्च वायु दाब पट्टी -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अल्पधिक निम्न तापमान के कारण सतह पर वायु सघन होती है। इसीलिए यहाँ उच्च वायु दाब का क्षेत्र बनता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	विस्तार - लगभग 80° अक्षांश से 90° तक
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इस प्रकार पृथ्वी पर 2 ध्रुवीय उच्च वायुदाब पट्टी, 2 उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पट्टी तथा 2 उपोष्ण उच्च वायुदाब पट्टी व एक विषुवतीय निम्न वायु दाब पट्टी पायी जाती है।

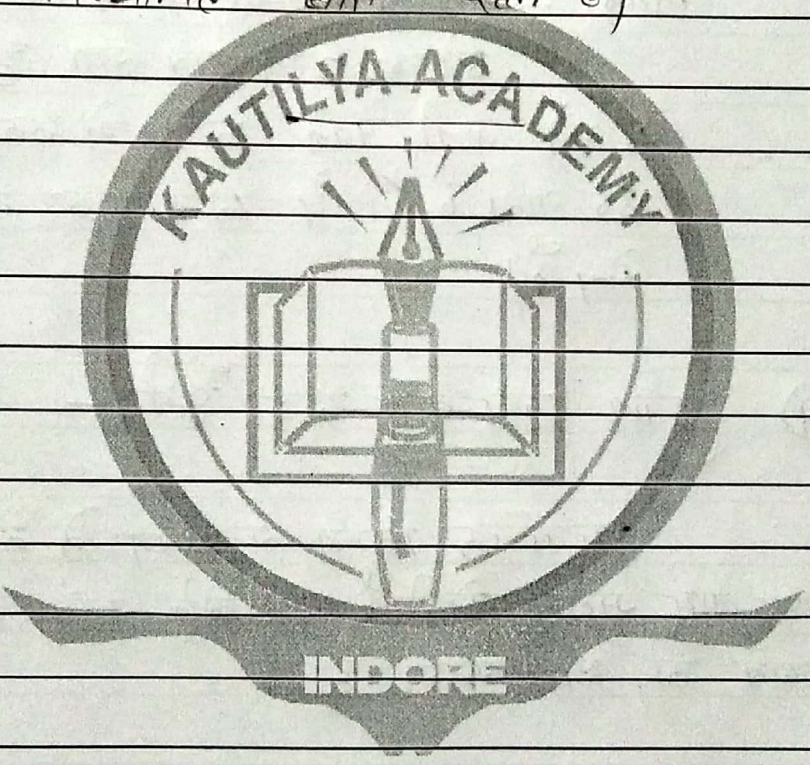
प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेष्टा द्वारा..

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	—यूँकि पृथ्वी व सूर्य की स्थिति वर्ष भर समान नहीं रहती। पृथ्वी का झुकाव तथा परिक्रमण काल के कारण सूर्य के उत्तरायण व दक्षिणायन होने से तापमान में परिवर्तन होता है। जिले का वायुमंडल के ये प्रेरियाँ भी विस्थापित होती रहती हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	



3	C	<p>भारत का प्रायद्वीपीय भाग त्रिभुजाकार है। जो पश्चिम में गुजरात से लेकर उत्तर में दिल्ली से सीमा बनाता हुआ तथा पूर्व में मेघालय की पहाड़ियों के खेदे हुए तक तथा दक्षिण में पर्वतीय पहाड़ी क्षेत्र तक फैला हुआ है।</p>
		<p>यह प्रायद्वीपीय संरचना प्राचीन गोंडवाना भूमि का हिस्सा है, इसकी शाल पश्चिमोत्तर से पूर्वी की ओर की है जो कि मघनदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी नदियों की दिशा में स्पष्ट होता है।</p>
		<p>भारत की इस प्रायद्वीपीय भूआकृति में भिन्नता के आधार पर इसे विभक्त विभिन्न रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है।</p>
		<p style="text-align: center;">प्रायद्वीप के विभाग</p>
		<pre> graph TD A[प्रायद्वीप के विभाग] --> B[केन्द्रीय अंचल] A --> C[पश्चिमी घाट] A --> D[दक्षिण के पर्वतीय क्षेत्र] B --> E[अनेक छोटी भाग] C --> F[पूर्वी घाट] </pre>

प्रश्न
संख्या

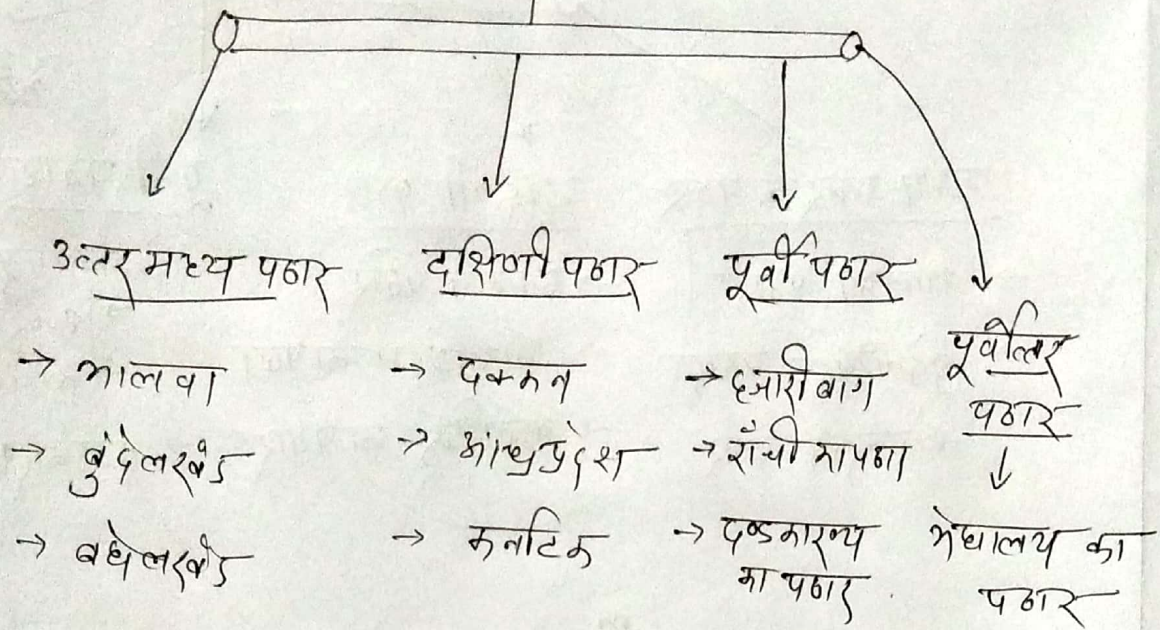
मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	① केन्द्रीय उच्च भूमि -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	केन्द्रीय उच्च भूमि के तहत
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भरावली पर्वत का विस्तार गुजरात के
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	पालनपुर से लेकर दिल्ली रिज तक है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इसका सर्वोच्च शिखर शुकशिखर है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	श्रीकृष्ण माल को वेनार चट्टानों से निर्मित
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भरावली खनिजों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	"विंध्याचल" मेड़वार शायीन पर्वत है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जो पश्चिम से पूर्व तक जोखाल पहाड़ी, आरनेर
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	केन्द्र और पारसनाथ पहाड़ियों के रूप में
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आरखंड तक फैला है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	'जलपुत्रा' एक लोक पर्वत है जो
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	नर्मदा व तापी के मध्य जलविभाजक का कार्य
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	करता है। विंध्याचल के पश्चिम में इसके समोच्च
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	विस्तृत है। राजपीपला, महादेव तथा मैकल
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इसकी पश्चिम से पूर्व तक विस्तृत पहाड़ियाँ हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	राजमहल की पहाड़ियाँ केन्द्रीय उच्च
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भूमि का सबसे पूर्वी किनारा है जो मैकल के
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	पूर्व में है।

② प्रायद्वीप के पठारी भाग



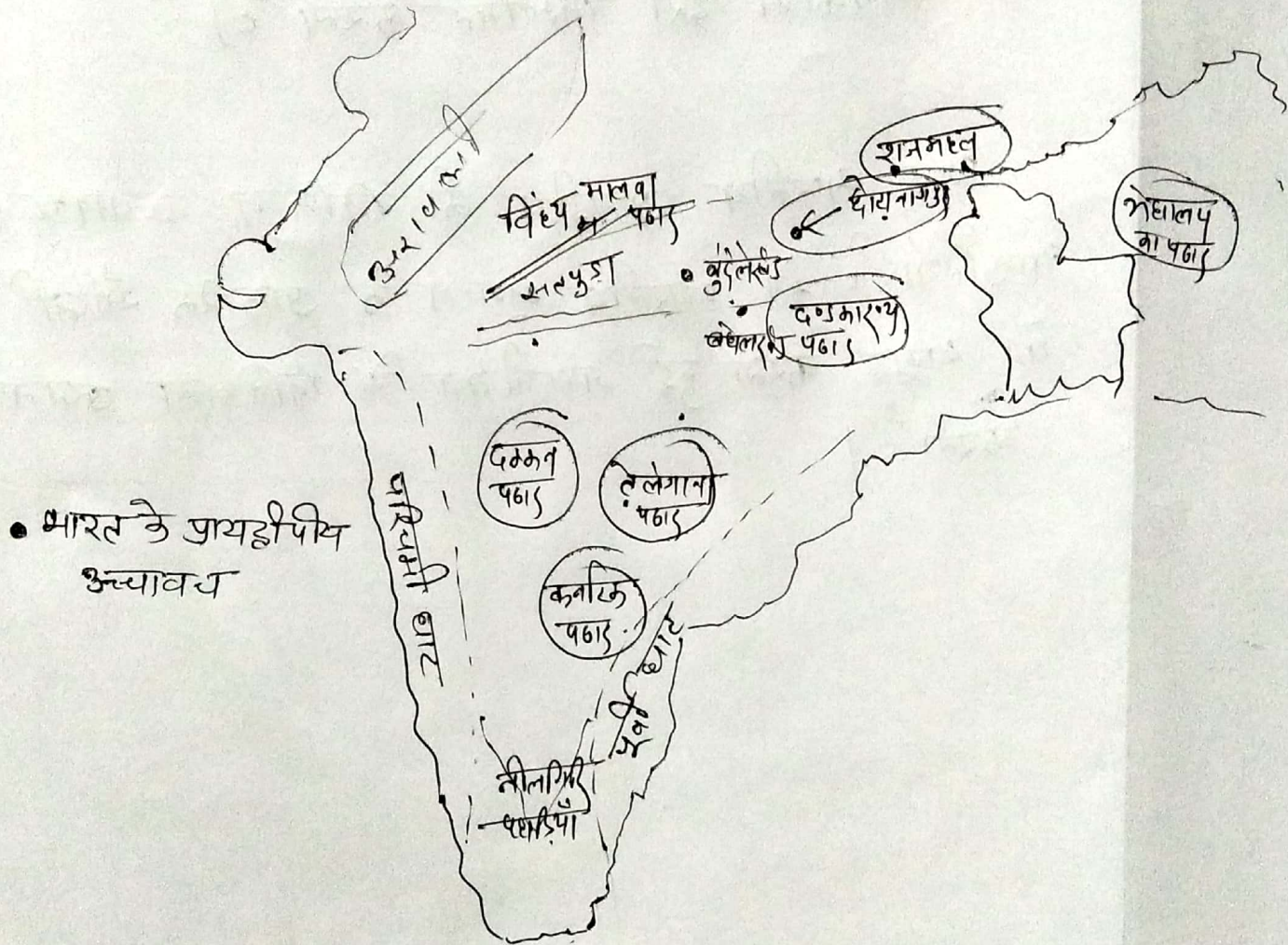
③ पश्चिमी घाट -

राप्ती के मुहाने से लेकर नीलगिरि पहाड़ियों तक की 1600 किमी शृंखला पश्चिमी घाट कहलाती है। यह पूरी तरह सम नहीं है बल्कि बीच-बीच में कहीं कुछ ही जगहों थाल घाट, शोर घाट तथा पाल घाट जैसे दर्रे जुड़ते हैं। यह वास्तविक शृंखला बड़े पर्वतमाला न होने के अंश कारण है इसे 'सहायि' भी कहते हैं। ग्रेनाइट तथा नीस पट्टणों की उपरलाठी

④ पूर्वी घाट -

उत्तरी सरकार (उड़ीसा राज्य) से लेकर कुड़प्पा पहाड़ियों तथा तमिलनाडु की पहाड़ियों तक विस्तृत अर्धपहाड़ी शृंखला है। पूर्वी घाट की पूर्वी की ओर बहने वाली नदियों द्वारा विषम ऊँचाई का कर दिया है।

पूर्वी घाट शतनदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि नदियों के डेल्टा तथा नल्लामाला, सरमाला, वेलीकोंडा व पालकोंडा, शेवराय और जावदी पहाड़ियों की सम्मिलित भूभागीय भावृति को कहते हैं।



⑤ दक्षिण के पर्वतीय क्षेत्र -

दक्षिण में उच्च पहाड़ी क्षेत्र में नीलगिरी की पहाड़ियाँ, अनामलाई, कर्दम पहाड़ियाँ, पालनी की पहाड़ियाँ आदि सम्मिलनाडु के उत्तरपश्चिमी भाग में कनक तथा मांध्र, केरल के लगती हैं।

नीलशिखर की सबसे ऊँची चोटी डोडाबेटा है
तथा अनामलाई की अनाइमुडी चोटी सबसे ऊँची है।
इन दोनों पहाड़ियों के मध्य क्षेत्र में पालघाट
है।

इसी तरह अनामलाई व आदिम पहाड़ियों
को शिनेकोय दर्रा विभाजित करता है।

अतः भारतीय उपद्वीप की विभिन्न उच्चावच
आकृतियाँ हैं जो भारतीय भूभाग के प्राकृतिक सौंदर्य
को समृद्ध करती हुई जनजीवन में विविधता प्रदान
करती हैं।

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भारत की अपनी विशिष्ट भू-माप्टि
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	आई जलवायु विविधता के कारण यहाँ
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	लगभग सभी प्रकार के वनों का विकास
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	हुआ है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	वनों के इस विकास क्रिया में
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	स्थानीय वर्षा तथा तापमान ने महत्वपूर्ण
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भूमिका निभाई है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भारतीय वनों का वर्गीकरण निम्नलिखित
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भागों में किया जा सकता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	① 3000 मीटर से अधिक वर्षा वन / सदाबहार वन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	② पर्वतीय / मानसूनी वन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	③ आई पर्वतीय वन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	④ शुष्क पर्वतीय वन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	⑤ कंटीले वन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	⑥ अर्धशुष्क / शुष्क / मरुस्थलीय वनस्पति
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	⑦ मैंग्रोव / न्दारीय वन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	⑧ पर्वतीय वन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भारतीय वनों का यह वर्गीकरण क्षेत्रानुसार
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	तथा ऊँचाई प्रकृति में 900 m की ऊँचाई
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	सीमा को आधार मानकर सम्मिलित रूप से है।

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	① उष्ण करिबन्धीय वर्षा वन / लदाखट वन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जहाँ वर्षा की मात्रा $> 200 \text{ cm}$
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	व तापमान = 15 से 30°C हो
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ भारत में इन वनों का विकास -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढाल पर
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- पूर्वोत्तर भारत के कुछ राज्य असम, मेघालय,
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	नागालैण्ड, आदि
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- हिमालय के तराई भाग
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- मण्डमान व निकोबार द्वीप समूह
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ उष्ण वृक्ष - आयसल वुड, रोजवुड, मधोगनी
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	रबोनी, गजनि आदि।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	② पर्णपाती वन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इस प्रकार के वनों को
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	वर्षा की भिन्नता तथा ताप के समान होने
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	के कारण पर 2 भागों में बाँटा गया है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	① आर्द्रपर्णपाती वन -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जहाँ वर्षा की मात्रा = 100-200 सेमी
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	उदा. - उत्तर पूर्वी राज्यों, पश्चिमी घाट के



प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	पूर्वी हालां, ओडीशा में पाये जाते हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	मुख्य वृक्ष - साल, सागवान, शीशम आदि
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	① शुष्क पत्तिली वन -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जहाँ वर्षा की मात्रा = 70-100 सेमी.
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	उदा - उत्तर प्रदेश व बिहार के मैदानी भाग में
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	मुख्य वृक्ष - पलाश, आमलतास, बेल आदि
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	② कैली वन :-
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ जहाँ वर्षा की मात्रा = 50 सेमी - 100 सेमी
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	ये भी कम है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	मुख्य क्षेत्र → दक्षिण पश्चिमी पंजाब, हरियाणा
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	राजस्थान, म.प्र. व उत्तर प्रदेश के
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अधिकांश प्रदेश।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	मुख्य वनस्पतियाँ - धान एवं झाड़ियाँ जैसे
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	बैर, बबूल, खजूर, खैर आदि
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	③ महस्थलीय वन :-
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जहाँ वर्षा की मात्रा 50 सेमी से
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भी कम है।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	सेवा - राजस्थान के महसूलार्थी भाग, 177 के वनस्पतियाँ - बबूल, बागफनी आदि
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	(5) पर्वतीय वन - भारत में पर्वतीय वनों के 2 भाग हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	① उच्च पर्वतीय वन - हिमालय के गिरिपद पर पाये जाने वाले जिनमें पश्चिमी हिमालयी तथा पूर्वी हिमालयी वन शामिल हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	पूर्वी हिमालयी वन पश्चिमी हिमालयी वन
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	↓ ↓ वर्षा ↑ वर्षा ↓ ताप ↑ ताप ↓
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	1300 मी से अधिक ऊँचाई पर पाये जाने वाले इन वनों को दुष्प्रा वनस्पति कहते हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इका: पूर्वी हिमालय में "ओक" सदाबहार वनों का विस्तार है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	हिमालयी वनों में ऊँचाई के आधार पर सदाबहार पत्तिली, शुष्क (शीतोष्ण कठिंधीय) रत्नपात्र वन पाये जाते हैं।



<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	④ दक्षिण पर्वतीय वन -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	ये प्रायः सायलीप के पश्चिमी धार
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	विंध्याचल तथा नीलगिरि पर्वत श्रृंखलाओं में
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	पैले हुये हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	यथा. उष्ण एवं शीतल कटिबंधीय
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	वनो का विकास हुआ है। जिसके. निधारक हैं -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	कम ऊँचाई पर उष्ण तापमान तथा वर्षा का
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	अधिक होना।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	⑤ मैंग्रोव / स्थलीय वन -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ ये स्त्ररे जल में विकसित होने
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	वाले स्थलीय वन हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ भारत में स्थलीय वनों के अंतर्गत
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	गंगा, गोदावरी, कावेरी, कृष्णा के डेल्टा
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भाग आते हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	→ प्रमुख वृक्ष - सुंदरी, गोलपत्ता,
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	गगनि, गोवा पाथुर.
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इस प्रकार भारतीय वन अपनी विविधता
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	एवं विविध जीवों के आवास, प्रजातियों की विविधता

प्रश्न
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेष्टा द्वारा..

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	के लिये विश्व भर में जसिद्ध है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	हाला ही में भारतीय वन सर्वेक्षण रिपोर्ट
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	के अनुसार भारतीय वनावरण इसके कुल
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भौगोलिक क्षेत्रफल का 21.67 % है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भर उल्लिखित पिछले रिपोर्ट की तुलना में
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	0.65 % की ह्रास को दर्शाती है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भारत की राष्ट्रीय वन नीति, 1988 में
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	देश के 33% भौगोलिक क्षेत्र को वन व
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	वृक्ष आवरण का लक्ष्य रखा गया है। जिसकी
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	दिशा में भारत सरकार द्वारा लगातार प्रयास
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	किये जा रहे हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	